Tilawat Ki Fazilat (Hindi)

तिलावत की फ़ज़ीलत

वाह क्या बात है आ़शिक़े क़ुरआन की !	2
एक ह़र्फ़ की दस नेकियां	3
आयत या सुन्नत सिखाने की फ़ज़ीलत	6
तिलावत के 21 मदनी फूल	11
क़ुरआन पढ़ने वाले मदनी मुन्नों की फ़ज़ीलत	20
सज्दए तिलावत के 22 मदनी फूल	21
तरजमए क़ुरआन के 4 मदनी फूल	32

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

तिलावत की फ़ज़ीलत

येह रिसाला **(तिलावत की फ़ज़ीलत)**

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात,
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

तिलावत की फ़ज़ीलत

शैत़ान इस रिसाले से बहुत रोकेगा मगर आप पढ़ लीजिये
اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का बेश बहा ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है, मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना पुल सिरात़ पर नूर है, जो रोज़े जुमुआ़ मुझ पर **अस्सी** बार दुरूदे पाक पढ़े उस के **अस्सी साल** के गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे ।

(اَلْجَامِعُ الصَّغِیْر لِلسُّیُوْطِیّ، ص۳۲۰،حدیث ۵۱۹۱، دار الکتب العلمیة بیروت)

येही है आरज़ू ता'लीमे कुरआं आ़म हो जाए
हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाए

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वाह क्या बात है आ़शिक़े कुरआन की

ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی रोज़ाना एक बार **ख़त्मे कुरआने** पाक फ़रमाते थे । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **हमेशा दिन को रोज़ा** रखते और सारी रात क़ियाम (इ़बादत) फ़रमाते, जिस मस्जिद से गुज़रते उस में दो रक्अ़त (तह़िय्यतुल मस्जिद) ज़रूर पढ़ते । तह़दीसे ने'मत के त़ौर पर फ़रमाते हैं : मैं ने जामेअ़ मस्जिद के हर सुतून के पास **कुरआने पाक** का ख़त्म और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में गिर्या किया है । नमाज़ और **तिलावते कुरआन** के साथ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़ुसूसी मह़ब्बत थी,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर ऐसा करम हुवा कि रश्क आता है चुनान्चे वफ़ात के बा'द दौराने तदफ़ीन **अचानक एक ईंट सरक कर अन्दर चली गई, लोग ईंट उठाने के लिये जब झुके तो येह देख कर ह़ैरान रह गए कि आप** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه **क़ब्र में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ रहे हैं !** आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के घर वालों से जब मा'लूम किया गया तो शहज़ादी साहि़बा ने बताया : वालिदे मोह़तरम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم रोज़ाना दुआ़ किया करते थे : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** अगर तू किसी को वफ़ात के बा'द क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की सआ़दत अ़ता फ़रमाए तो मुझे भी मुशर्रफ़ फ़रमाना।" मन्क़ूल है : जब भी लोग आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार के क़रीब से गुज़रते तो क़ब्रे अन्वर से **तिलावते क़ुरआन** की आवाज़ आ रही होती। (حِلْيَةُ الْاولياء، ج٢، ص٣٦٢-٣٦٦ مُلتَقطاً، دارالكتب العلمية) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

दहन मैला नहीं होता बदन मैला नहीं होता
ख़ुदा के औलिया का तो कफ़न मैला नहीं होता

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक ह़र्फ़ की दस नेकियां

क़ुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद **अल्लाहु** रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ का मुबारक कलाम है, इस का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना सुनाना सब सवाब का काम है। क़ुरआने पाक का एक **ह़र्फ़** पढ़ने पर **10 नेकियों** का सवाब मिलता है, चुनान्चे ख़ातमुल मुरसलीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "जो शख़्स किताबुल्लाह का एक ह़र्फ़ पढ़ेगा, उस को एक नेकी मिलेगी जो दस के बराबर होगी । मैं येह नहीं कहता الٓمّٓ एक ह़र्फ़ है, बल्कि **अलिफ़** एक ह़र्फ़, **लाम** एक ह़र्फ़ और **मीम** एक ह़र्फ़ है ।" (سُنَنُ التِّرْمِذِی، ج ٤، ص ٤١٧، حدیث ٢٩١٩)

तिलावत की तौफ़ीक़ दे दे इलाही

गुनाहों की हो दूर दिल से सियाही

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बेहतरीन शख़्स

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : **خَیْرُکُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَهٗ या'नी तुम में बेहतरीन शख़्स वोह है जिस ने क़ुरआन सीखा और दूसरों को सिखाया ।** (صَحِیْحُ الْبُخاری، ج٣، ص ٤١٠، حدیث ٥٠٢٧) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान सुलमी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मस्जिद में **क़ुरआने पाक** पढ़ाया करते और फ़रमाते : इसी ह़दीसे मुबारक ने मुझे यहां बिठा रखा है । (فَیضُ الْقَدیر، ج٣، ص٦١٨، تحتَ الحدیث ٣٩٨٣)

अल्लाह मुझे ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बना दे

क़ुरआन के अह़काम पे भी मुझ को चला दे

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ुरआन शफ़ाअ़त कर के जन्नत में ले जाएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूले अकरम, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जिस शख़्स ने **कुरआने पाक** सीखा और सिखाया और जो कुछ कुरआने पाक में है उस पर अ़मल किया, कुरआन शरीफ़ उस की **शफ़ाअ़त** करेगा और जन्नत में ले जाएगा।

(تاریخ دمشق لابن عساکِر، ج ٤١، ص٣، اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرَانیّ، ج ١٠، ص١٩٨، حدیث ١٠٤٥٠)

इलाही ख़ूब दे दे शौक़ कुरआं की तिलावत का

शरफ़ दे गुम्बदे ख़ज़रा के साए में शहादत का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आयत या सुन्नत सिखाने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि जिस शख़्स ने **कुरआने मजीद** की एक आयत या दीन की कोई **सुन्नत** सिखाई क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये ऐसा सवाब तय्यार फ़रमाएगा कि इस से बेहतर सवाब किसी के लिये भी नहीं होगा।

(جَمْعُ الْجَوَامِع لِلسُّیُوْطِیّ، ج٧، ص٢٨١، حدیث ٢٢٤٥٤)

तिलावत करूं हर घड़ी या इलाही

बकूं न कभी भी मैं वाही तबाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक आयत सिखाने वाले के लिये क़ियामत तक सवाब !

जुन्नूरैन, जामिउ़ल कुरआन ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़स्मान इब्ने अ़फ़्फ़ान** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने **कुरआने**

मुबीन की एक आयत सिखाई उस के लिये सीखने वाले से दुगना सवाब है। एक और ह़दीसे पाक में **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातमुल मुरसलीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं **:** जिस ने **क़ुरआने अ़ज़ीम** की एक आयत सिखाई जब तक उस आयत की तिलावत होती रहेगी उस के लिये सवाब जारी रहेगा। (جَمْعُ الْجَوَامِع، ج۷، ص۲۸۲، حدیث ۲۲٤۵۵-۲۲٤۵٦)

तिलावत का जज़्बा अ़ता कर इलाही

मुआ़फ़ फ़रमा मेरी ख़ता हर इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह तआ़ला क़ियामत तक अज्र बढ़ाता रहेगा

एक ह़दीस शरीफ़ में है जिस शख़्स ने किताबुल्लाह की एक आयत या इ़ल्म का एक बाब सिखाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ता क़ियामत उस का अज्र बढ़ाता रहेगा। (تاریخ دمشق لابن عساکِر، ج ۵۹، ص ۲۹۰)

अ़ता हो शौक़ मौला मद्रसे में आने जाने का

ख़ुदाया ज़ौक़ दे क़ुरआन पढ़ने का पढ़ाने का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهुُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मां के पेट में 15 पारे ह़िफ़्ज़ कर लिये

"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" से एक मुफ़ीद **अ़र्ज़** और ईमान अफ़रोज़ **इर्शाद** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये **:**

अ़र्ज़ : हुज़ूर "तक़रीबे बिस्मिल्लाह" की कोई उ़म्र शरअ़न मुक़र्रर है ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

इर्शाद : शरअ़न कुछ मुक़र्रर नहीं, हां मशाइख़े किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) के यहां **चार बरस चार महीने चार दिन** मुक़र्रर हैं । ह़ज़रत ख़्वाजा क़ुत़्बुल ह़क़्क़े वद्दीन **बख़्तियार काकी** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की उ़म्र जिस दिन चार बरस चार महीने चार दिन की हुई (तो) ''तक़रीबे बिस्मिल्लाह'' मुक़र्रर हुई, लोग बुलाए गए । **ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه भी तशरीफ़ फ़रमा हुए । बिस्मिल्लाह पढ़ाना चाही मगर इल्हाम हुवा कि ठहरो ! **ह़मीदुद्दीन नागोरी** आता है वोह पढ़ाएगा । इधर नागोर में क़ाज़ी ह़मीदुद्दीन साहिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को इल्हाम हुवा कि जल्द जा मेरे एक बन्दे को ''बिस्मिल्लाह'' पढ़ा । क़ाज़ी साहिब फ़ौरन तशरीफ़ लाए और आप से फ़रमाया **:** साहिब ज़ादे पढ़िये ! بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ○ आप ने पढ़ा **:** اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ○ **और शुरूअ़ से ले कर पन्दरह पारे ह़िफ़्ज़ सुना दिये ।** ह़ज़रत क़ाज़ी साहिब और ख़्वाजा साहिब ने फ़रमाया **:** साहिब ज़ादे आगे पढ़िये ! फ़रमाया **: मैं ने अपनी मां के शिकम** (पेट) **में इतने ही सुने थे और इसी क़दर उन** (या'नी अम्मीजान) **को याद थे, वोह मुझे भी याद हो गए !''** (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 481, मक्तबतुल मदीना) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ख़ुदा अपनी उल्फ़त में सादिक़ बना दे

मुझे मुस्त़फ़ा का तू आ़शिक़ बना दे

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

अफ़्सोस ! इस्लामी मा'लूमात की कमी की वज्ह से आज मुसल्मानों की बहुत बड़ी ता'दाद कुरआने पाक पढ़ने पढ़ाने, सुनने सुनाने और छूने उठाने वग़ैरा के शर्ई अह़काम से ना बलद है। इशाअ़ते इ़ल्म का सवाब पाने और मुसल्मानों को गुनाहों से बचाने की निय्यत से कुरआने पाक के बारे में रंग बिरंगे **मदनी फूलों** का गुलदस्ता पेश करता हूं।

"कुरआन तमाम ही कुतुब से अफ़्ज़ल है" के इक्कीस हुरूफ़ की निस्बत से तिलावत के 21 मदनी फूल

1 अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर** फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोज़ाना सुब्ह़ **कुरआने मजीद को चूमते थे** और फ़रमाते : "येह मेरे रब عَزَّوَجَلَّ का अ़ह्द और उस की किताब है।" (دُرِّ مُختار، ج۹، ص۶۳۴، دارالمعرفة بيروت) **2** तिलावत के आग़ाज़ में **अऊ़ज़ु** पढ़ना मुस्तह़ब है और इब्तिदाए सूरत में **बिस्मिल्लाह** सुन्नत, वरना मुस्तह़ब (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 3, स. 550, मक्तबतुल मदीना) **3** सूरए बराअत (सूरए तौबा) से अगर तिलावत शुरूअ़ की तो اَعُوْذُ بِاللّٰه (और) بِسْمِ اللّٰه (दोनों) कह लीजिये और जो इस के पहले से तिलावत शुरूअ़ की और **सूरए तौबा** (दौराने तिलावत) आ गई तो तस्मिया (या'नी बिस्मिल्लाह शरीफ़) पढ़ने की ह़ाजत नहीं। और इस की इब्तिदा में नया तअ़व्वुज़ जो आज कल के ह़ाफ़िज़ों ने निकाला है, **बे अस्ल** है और येह जो मश्हूर है कि **सूरए तौबा** इब्तिदाअन भी पढ़े जब भी बिस्मिल्लाह न पढ़े येह मह़्ज़ ग़लत़ है (ऐज़न, स. 551) **4** बा वुज़ू, क़िब्ला रू, अच्छे कपड़े पहन कर तिलावत करना मुस्तह़ब है (ऐज़न, स.

550) ﴾5﴿ कुरआने मजीद देख कर पढ़ना, ज़बानी पढ़ने से **अफ़्ज़ल** है कि येह पढ़ना भी है और देखना और हाथ से इस का छूना भी और येह सब काम **इबादत** हैं। (غُنْيَةُ الْمُتَمَلِّى، ص٤٩٥) ﴾6﴿ कुरआने मजीद को निहायत **अच्छी आवाज़** से पढ़ना चाहिये, अगर आवाज़ अच्छी न हो तो अच्छी आवाज़ बनाने की कोशिश करे, मगर **लह़्न** के साथ पढ़ना कि हुरूफ़ में **कमी बेशी** हो जाए जैसे गाने वाले किया करते हैं येह ना जाइज़ है, बल्कि पढ़ने में **क़वाइदे तजवीद** की रिआ़यत कीजिये (دُرِّ مُختار، رَدُّالْمُحتار، ج٩، ص٦٩٤) ﴾7﴿ कुरआने मजीद बुलन्द आवाज़ से पढ़ना **अफ़्ज़ल** है जब कि किसी नमाज़ी या मरीज़ या सोते को ईज़ा न पहुंचे (غُنْيَةُ الْمُتَمَلِّى، ص٤٩٧) ﴾8﴿ जब कुरआने पाक की सूरतें या आयतें पढ़ी जाती हैं उस वक़्त बा'ज़ लोग चुप तो रहते हैं मगर इधर उधर देखने और दीगर ह़रकात व इशारात वग़ैरा से बाज़ नहीं आते, ऐसों की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि चुप रहने के साथ साथ ग़ौर से सुनना भी लाज़िमी है। जैसा कि **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 23 सफ़ह़ा 352 पर मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं **:** कुरआने मजीद पढ़ा जाए उसे कान लगा कर ग़ौर से सुनना और ख़ामोश रहना **फ़र्ज़** है। قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى (**अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया **:**) وَ اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَ اَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ۝ (پ٩ الاعراف ٢٠٤) (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रह़्म हो) ﴾9﴿ **जब** बुलन्द आवाज़ से कुरआन पढ़ा जाए तो तमाम ह़ाज़िरीन पर सुनना **फ़र्ज़** है, जब कि वोह

मज्मअ़ सुनने के लिये ह़ाज़िर हो वरना **एक** का सुनना काफ़ी है, अगर्चे और (लोग) अपने काम में हों। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 23, स. 353, मुलख़्ख़सन) ﴾10﴿ **मज्मअ़** में सब लोग बुलन्द आवाज़ से पढ़ें येह **ह़राम** है, अक्सर तीजों में सब बुलन्द आवाज़ से पढ़ते हैं येह **ह़राम** है, अगर चन्द शख़्स पढ़ने वाले हों तो हुक्म है कि **आहिस्ता** पढ़ें। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 3, स. 552) ﴾11﴿ मस्जिद में दूसरे लोग हों, नमाज़ या अपने विर्दो वज़ाइफ़ पढ़ रहे हों उस वक़्त फ़क़त़ इतनी आवाज़ से तिलावत कीजिये कि सिर्फ़ आप ख़ुद सुन सकें बराबर वाले को आवाज़ न पहुंचे ﴾12﴿ बाज़ारों में और जहां लोग काम में मश्ग़ूल हों बुलन्द आवाज़ से पढ़ना **ना जाइज़** है, लोग अगर न सुनेंगे तो गुनाह पढ़ने वाले पर है अगर काम में मश्ग़ूल होने से पहले इस ने पढ़ना शुरूअ़ कर दिया हो और अगर वोह जगह काम करने के लिये मुक़र्रर न हो तो अगर पहले पढ़ना इस ने शुरूअ़ किया और लोग नहीं सुनते तो लोगों पर गुनाह और अगर काम शुरूअ़ करने के बा'द इस ने पढ़ना शुरूअ़ किया, तो इस (या'नी पढ़ने वाले) पर गुनाह (غُنْیَۃُ الْمُتَمَلِّی، ص۴۹۷) ﴾13﴿ जहां कोई शख़्स इल्मे दीन पढ़ा रहा है या त़ालिबे इल्म इल्मे दीन की तकरार करते या मुत़ालआ़ देखते हों, वहां भी बुलन्द आवाज़ से पढ़ना मन्अ़ है। (اَیضاً) ﴾14﴿ **लैट** कर क़ुरआन पढ़ने में ह़रज नहीं जब कि पाउं **सिमटे** हों और मुंह खुला हो, यूंही चलने और काम करने की ह़ालत में भी तिलावत जाइज़ है, जब कि दिल न बटे, वरना मक्रूह है। (اَیضاً ص۴۹۶) ﴾15﴿ **ग़ुस्ल** ख़ाने और नजासत की जगहों में क़ुरआने मजीद पढ़ना, **ना जाइज़** है (اَیضاً) ﴾16﴿ **क़ुरआने** मजीद सुनना,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

तिलावत करने और नफ़्ल पढ़ने से **अफ़्ज़ल** है (اَیضاً ص٤٩٧) **17** जो शख़्स ग़लत़ पढ़ता हो तो सुनने वाले पर वाजिब है कि बता दे, बशर्ते कि बताने की वज्ह से कीना व ह़सद पैदा न हो। (اَیضاً ص٤٩٨) **18** इसी त़रह़ अगर किसी का मुस्ह़फ़ शरीफ़ (कुरआने पाक) अपने पास आ़रियत (या'नी वक़्ती त़ौर पर लिया हुवा) है, अगर उस में किताबत की ग़लती देखे, (तो जिस का है उसे) बता देना वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 3, स. 553) **19** **गर्मियों** में सुब्ह़ को **कुरआने मजीद** ख़त्म करना **बेहतर** है और **सर्दियों** में अव्वल शब को कि ह़दीस में है : "जिस ने शुरूअ़ दिन में **कुरआन ख़त्म** किया, शाम तक फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं और जिस ने इब्तिदाए शब में **ख़त्म** किया, सुब्ह़ तक इस्तिग़फ़ार करते हैं।" गर्मियों में चूंकि दिन बड़ा होता है तो सुब्ह़ के वक़्त ख़त्म करने में इस्तिग़फ़ारे मलाएका ज़ियादा होगी और जाड़ों (या'नी सर्दियों) की रातें बड़ी होती हैं तो शुरूअ़ रात में **ख़त्म** करने से इस्तिग़फ़ार ज़ियादा होगी। (غُنْیَۃُ الْمُتَمَلِّی، ص٤٩٦) **20** जब कुरआने पाक **ख़त्म** हो तो तीन बार सूरए इख़्लास पढ़ना **बेहतर** है। अगर्चे **तरावीह़** में हो, अलबत्ता अगर फ़र्ज़ नमाज़ में ख़त्म करे तो एक बार से ज़ियादा न पढ़े। (غُنْیَۃُ الْمُتَمَلِّی، ص٤٩٦) **21** **ख़त्मे कुरआन का त़रीक़ा** येह है कि सूरए नास पढ़ने के बा'द सुरए फ़ातिह़ा और **सूरए बक़रह** से وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ तक पढ़िये और इस के बा'द दुआ़ मांगिये कि येह **सुन्नत** है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत करते हैं : "**नबिय्ये करीम,** रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब " قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ " पढ़ते तो सूरए फ़ातिह़ा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

शुरूअ़ फ़रमाते फिर सूरए बक़रह से "وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ۝" तक पढ़ते फिर ख़त्मे क़ुरआन की दुआ़ पढ़ कर खड़े होते।"

(اَلْاِتقَان فِیْ عُلُوْمِ الْقُرْاٰن، ج۱، ص۱۵۸)

इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा

दुल्हन बन के निकली दुआ़ए मुह़म्मद

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मदनी मुन्ने ने राज़ फ़ाश कर दिया !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं **:** ह़ज़रते सय्यिदुना **अबुल ह़सन मुह़म्मद बिन अस्लम त़ूसी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی अपनी **नेकियां छुपाने** का बेह़द ख़याल फ़रमाते यहां तक कि एक बार फ़रमाने लगे **:** अगर मेरा बस चले तो मैं **किरामन कातिबीन** (आ'माल लिखने वाले दोनों बुज़ुर्ग फ़िरिश्तों) से भी छुप कर इ़बादत करूं ! रावी कहते हैं **:** मैं **बीस बरस** से ज़ियादा अ़र्सा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की सोह़बत में रहा मगर जुमुअ़तुल मुबारक के इ़लावा कभी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को दो रक्अ़त नफ़्ल भी पढ़ते नहीं देख सका। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पानी का कूज़ा ले कर अपने कमरए ख़ास में तशरीफ़ ले जाते और अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लेते थे। मैं कभी भी न जान सका कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه कमरे में क्या करते हैं, यहां तक कि एक दिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का **मदनी मुन्ना ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।** उस की अम्मी जान चुप करवाने की कोशिश कर रही थीं, मैं ने कहा **: मदनी मुन्ना** आख़िर इस क़दर क्यूं रो रहा है ? बीबी साहिबा ने फ़रमाया **:** इस के अब्बू (ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन त़ूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی) **इस कमरे में दाख़िल हो कर तिलावते क़ुरआन करते**

हैं और रोते हैं तो येह भी उन की आवाज़ सुन कर रोने लगता है ! शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं **:** ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन तूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (रियाकारियों की तबाह कारियों से बचने की ख़ात़िर) नेकियां छुपाने की इस क़दर सअ़्य फ़रमाते थे कि अपने उस कम्रए ख़ास से इ़बादत करने के बा'द बाहर निकलने से पहले अपना मुंह धो कर आंखों में सुरमा लगा लेते ताकि चेहरा और आंखें देख कर किसी को अन्दाज़ा न होने पाए कि येह रोए थे ! (حِلْيَةُ الاولياء، ج٩، ص٢٥٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ الله ! एक त़रफ़ नेकियां छुपाने वाले वोह मुख़्लिस सालेह़ इन्सान और आह ! दूसरी त़रफ़ अपनी नेकियों का बढ़ा चढ़ा कर ढंडोरा पीटने वाले हम जैसे इख़्लास से आ़री नादान ! कि अव्वल तो नेकी हो नहीं पाती है कभी हो भी गई तो रियाकारी लागू पड़ जाती है । हाए ! हाए !

नफ़्से बदकार ने दिल पर येह क़ियामत तोड़ी
अ़मले नेक किया भी तो छुपाने न दिया

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ुरआने करीम के हु़रूफ़ की दुरुस्त मख़ारिज से अदाएगी और ग़लत़ पढ़ने से बचना फ़र्ज़े ऐ़न है

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान علیہ رحمۃ الرحمٰن फ़रमाते हैं : "बिला शुबा इतनी **तजवीद** जिस से तस्ह़ीहे़ हु़रूफ़ हो (या'नी क़वाइदे तजवीद के मुत़ाबिक़ हु़रूफ़ को दुरुस्त मख़ारिज से अदा कर सके), और ग़लत़ ख़्वानी (या'नी ग़लत़ पढ़ने) से बचे, **फ़र्ज़े ऐन** है।" (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 343)

क़ुरआन पढ़ने वाले मदनी मुन्नों की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़मीन वालों पर अ़ज़ाब करने का इरादा फ़रमाता है लेकिन जब बच्चों को **क़ुरआने पाक** पढ़ते सुनता है तो अ़ज़ाब को रोक लेता है। (سُنَنِ دارمی، ج۲، ص۵۳۰، حدیث ۳۳۴۵، دارالکتاب العربی بیروت)

हो करम अल्लाह ! ह़ाफ़िज़ मदनी मुन्नों के त़ुफ़ैल
जगमगाते गुम्बदे ख़ज़रा की किरनों के त़ुफ़ैल

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तह़रीक, **"दा'वते इस्लामी"** के तह़त बे शुमार मदारिस बनाम **मद्रसतुल मदीना** क़ाइम हैं। जिन में ता दमे तह़रीर हज़ारों मदनी मुन्ने और मदनी मुन्नियां ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम ह़ासिल कर रहे हैं, नीज़ ला ता'दाद मसाजिद व मक़ामात पर **मद्रसतुल मदीना** (बालिग़ान) का भी एहतिमाम होता है, जिन में दिन के अन्दर कामकाज में मसरूफ़ रहने वालों को उ़मूमन नमाज़े इशा के बा'द तक़रीबन 40 मिनट के लिये दुरुस्त **क़ुरआने मजीद** पढ़ना सिखाया जाता, मुख़्तलिफ़ दुआ़एं याद करवाई जातीं और सुन्नतें भी सिखाई जाती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी बहनों के लिये भी **मदारिसुल मदीना** (बालिग़ात) क़ाइम हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

"ख़ूब कुरआने पाक पढ़ो" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से सज्दए तिलावत के 14 मदनी फूल

﴾1﴿ **आयते** सज्दा पढ़ने या सुनने से सज्दा **वाजिब** हो जाता है। (اَلْهِدَایه، ج۱، ص۷۸، دار احیاء التراث العربی بیروت) ﴾2﴿ फ़ारसी या किसी और ज़बान में (भी अगर) आयत का तरजमा पढ़ा तो पढ़ने वाले और सुनने वाले पर सज्दा वाजिब हो गया, सुनने वाले ने येह समझा हो या नहीं कि आयते सज्दा का तरजमा है, अलबत्ता येह ज़रूर है कि उसे न मा'लूम हो तो बता दिया गया हो कि येह **आयते सज्दा** का तरजमा था और आयत पढ़ी गई हो तो इस की ज़रूरत नहीं कि सुनने वाले को **आयते सज्दा** होना बताया गया हो। (فتاوٰی عالمگیری، ج۱، ص۱۳۳) ﴾3﴿ **पढ़ने** में येह **शर्त़** है कि इतनी आवाज़ में हो कि अगर कोई उ़ज़्र न हो तो ख़ुद **सुन** सके। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हि़स्सा : 4, स. 728) ﴾4﴿ **सुनने** वाले के लिये येह ज़रूरी नहीं कि बिल क़स्द (या'नी इरादतन) सुनी हो, बिला क़स्द (या'नी बिला इरादा) सुनने से भी सज्दा **वाजिब** हो जाता है। (اَلْهِدَایه، ج۱، ص۷۸) ﴾5﴿ अगर इतनी आवाज़ से आयत पढ़ी कि सुन सकता था मगर शोरो गुल या बहरा होने की वज्ह से न सुनी तो **सज्दा** वाजिब हो गया और अगर मह़ज़ होंट हिले आवाज़ पैदा न हुई तो वाजिब न हुवा। (فتاوٰی عالمگیری، ج۱، ص۱۳۲) ﴾6﴿ **सज्दा** वाजिब होने के लिये **पूरी आयत** पढ़ना ज़रूरी नहीं बल्कि वोह लफ़्ज़ जिस में **सज्दे का माद्दा** पाया जाता है और उस के साथ क़ब्ल या बा'द का कोई लफ़्ज़ मिला कर पढ़ना काफ़ी है। (رَدُّ الْمُحتار، ج۲، ص۶۹۴) ﴾7﴿ **सज्दए तिलावत का त़रीक़ा :** सज्दे का मस्नून त़रीक़ा येह है कि खड़ा

हो कर **अल्लाहु अक्बर** कहता हुवा सज्दे में जाए और कम से कम तीन बार سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰی कहे, फिर **अल्लाहु अक्बर** कहता हुवा खड़ा हो जाए, पहले पीछे दोनों बार **अल्लाहु अक्बर** कहना **सुन्नत** है और खड़े हो कर सज्दे में जाना और सज्दे के बा'द खड़ा होना येह दोनों क़ियाम मुस्तहब। (دُرِّ مُختار، ج۲، ص۶۹۹) **8** **सज्दए तिलावत** के लिये **अल्लाहु अक्बर** कहते वक़्त न हाथ उठाना है न इस में तशह्हुद (या'नी अत्तहिय्यात) है न सलाम। (تَنوِیرُالاَبصَار، ج۲، ص۷۰۰) **9** इस की निय्यत में येह शर्त़ नहीं कि फुलां आयत का सज्दा है बल्कि मुत़्लक़न **सज्दए तिलावत** की निय्यत काफ़ी है। (دُرِّ مُختار،رَدُّ الْمُحتار، ج۲، ص۶۹۹) **10** आयते सज्दा बैरूने नमाज़ (या'नी नमाज़ के बाहर) पढ़ी तो फ़ौरन सज्दा कर लेना **वाजिब** नहीं हां **बेहतर** है कि फ़ौरन कर ले और वुज़ू हो तो ताख़ीर **मक्रूहे तन्ज़ीही।** (رَدُّ الْمُحتار، ج۲، ص۷۰۳) **11** उस वक़्त अगर किसी वज्ह से **सज्दा न** कर सके तो तिलावत करने वाले और सामेअ़ (या'नी सुनने वाले) को येह कह लेना मुस्तहब है **:** سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ۝ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** हम ने सुना और माना, तेरी मुआ़फ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही त़रफ़ फिरना है। (پ ۳، البقرۃ: ۲۸۵)) (رَدُّ الْمُحتار، ج۲، ص۷۰۳) **12** एक मजलिस[1] में सज्दे की एक आयत को बार बार **पढ़ा या सुना** तो एक ही सज्दा **वाजिब** होगा, अगर्चे चन्द शख़्सों से सुना हो यूंही अगर आयत पढ़ी और वोही आयत दूसरे से सुनी जब भी **एक** ही **सज्दा** वाजिब होगा।

مدینہ

1 : मजलिस की ता'रीफ़ व तफ़्सीलात मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द 1 हिस्सा 4 स. 736 पर मुलाहज़ा फ़रमाइये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्फ़िरत है। (ابن عساکر)

(دُرِّ مُختار، رَدُّ الْمُحتار، ج۲، ص۷۱۲) ﴾13﴿ पूरी सूरत पढ़ना और **आयते सज्दा** छोड़ देना **मक्रूहे तह़रीमी** है और सिर्फ़ **आयते सज्दा** के पढ़ने में कराहत नहीं, मगर बेहतर येह है कि दो एक आयत पहले या बा'द की मिला ले। (دُرِّ مُختار، ج۲، ص۷۱۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ाजत पूरी होने के लिये

﴾14﴿ (अह़नाफ़ या'नी ह़नफ़िय्यों के नज़्दीक कुरआने पाक में सज्दे की 14 आयतें हैं) जिस मक़्सद के लिये एक मजलिस में सज्दे की सब (या'नी 14) आयतें पढ़ कर सज्दे करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का **मक़्सद** पूरा फ़रमा देगा। ख़्वाह एक एक आयत पढ़ कर उस का सज्दा करता जाए या सब को पढ़ कर आख़िर में 14 सज्दे कर ले।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 4, स. 738)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

14 आयाते सज्दा

(۱) ﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ يُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ﴿۲۰۶﴾ ﴿ (پ ۹ اَعْرَاف ۲۰۶)

(۲) ﴾ وَ لِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّ كَرْهًا وَّ ظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿۱۵﴾ ﴿ (پ۱۳ رَعْد ۱۵)

(۳) ﴾ وَ لِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۴۹﴾ يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿۵۰﴾ ﴿

(پ۱۴ نَحْل ۴۹-۵۰)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

(٤) ﴿ اِنَّ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖۤ اِذَا یُتْلٰى عَلَیْهِمْ یَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ۟ۙ
وَّ یَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ۟ وَ یَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ
یَبْكُوْنَ وَ یَزِیْدُهُمْ خُشُوْعًا ۟ ﴾ (پ ١٥ بنی اِسرَائِیل ١٠٧۔١٠٩)

(٥) ﴿ اِذَا تُتْلٰى عَلَیْهِمْ اٰیٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ بُكِیًّا ۟ ﴾ (پ١٦ مَریَم ٥٨)

(٦) ﴿ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ یَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ فِی الْاَرْضِ وَ الشَّمْسُ
وَ الْقَمَرُ وَ النُّجُوْمُ وَ الْجِبَالُ وَ الشَّجَرُ وَ الدَّوَآبُّ وَ كَثِیْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَ كَثِیْرٌ حَقَّ
عَلَیْهِ الْعَذَابُ ؕ وَ مَنْ یُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَفْعَلُ مَا یَشَآءُ ۟ؕ ﴾
(پ١٧ حَج ١٨)

(٧) ﴿ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَ مَا الرَّحْمٰنُ ۗ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا
وَ زَادَهُمْ نُفُوْرًا ۟ ﴾ (پ١٩ فُرقَان ٦٠)

(٨) ﴿ اَلَّا یَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ یُخْرِجُ الْخَبْءَ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ یَعْلَمُ
مَا تُخْفُوْنَ وَ مَا تُعْلِنُوْنَ ۟ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ ۟ ﴾
(پ١٩ نَمل ٢٥۔٢٦)

(٩) ﴿ اِنَّمَا یُؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ سَبَّحُوْا بِحَمْدِ
رَبِّهِمْ وَ هُمْ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ ۟ ﴾ (پ٢١ سَجدَہ ١٥)

(١٠) ﴿ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَ خَرَّ رَاكِعًا وَّ اَنَابَ ۟ فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَ اِنَّ لَهٗ
عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَ حُسْنَ مَاٰبٍ ۟ ﴾ (پ٢٣ صٓ ٢٤۔٢٥)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा । (ابن بشكوال)

(۱۱) ﴿ وَمِنْ اٰیٰتِهِ الَّیْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِیَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۳۷﴾ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ یُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا یَسْـَٔمُوْنَ ﴿۳۸﴾ ﴾

(پ ۲٤ حٰمٓ السَّجْدَة ۳۷۔ ۳۸)

(۱۲) ﴿ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ﴿۶۲﴾ ﴾ (پ ۲۷ نجم ٦۲)

(۱۳) ﴿ فَمَا لَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَاِذَا قُرِئَ عَلَیْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا یَسْجُدُوْنَ ﴿۲۱﴾ ﴾

(پ ۳۰ اِنْشِقَاق ۲۰۔۲۱)

(١٤) ﴿ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ﴿۱۹﴾ ﴾ (پ ۳۰ عَلَق ۱۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

''फुरक़ाने हमीद'' के नव हुरूफ़ की निस्बत से कुरआने पाक को छूने के 9 मदनी फूल

﴿**1**﴾ अगर वुज़ू न हो तो कुरआने अज़ीम छूने के लिये **वुज़ू** करना फ़र्ज़ है । (نُوْرُ الْاِیْضَاح، ص۱۸) ﴿**2**﴾ **बे छूए** ज़बानी देख कर (बे वुज़ू) पढ़ने में कोई **हरज** नहीं ﴿**3**﴾ कुरआने मजीद छूने के लिये या **सज्दए तिलावत या सज्दए शुक्र** के लिये **तयम्मुम** जाइज़ नहीं जब कि पानी पर कुदरत हो । (बहारे शरीअत, जि.1, हिस्सा : 2, स. 352) ﴿**4**﴾ जिस पर **गुस्ल** फ़र्ज़ हो उस को **कुरआने मजीद** छूना अगर्चे इस का सादा हाशिया या जिल्द या चोली छूए या बे छूए देख कर या ज़बानी पढ़ना या किसी आयत का लिखना या

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

आयत का ता'वीज़ लिखना या ऐसा ता'वीज़ छूना या ऐसी अंगूठी छूना या पहनना जैसे मुक़त्तआत[1] की अंगूठी **ह़राम** है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हि़स्सा : 2, स. 326) **《5》** अगर क़ुरआने अ़ज़ीम जुज़्दान में हो तो जुज़्दान पर **हाथ** लगाने में ह़रज नहीं यूंही रुमाल वग़ैरा किसी ऐसे कपड़े से पकड़ना जो न अपना ताबेअ़ हो न क़ुरआने मजीद का तो **जाइज़** है, कुरते की आस्तीन, दोपट्टे के आंचल से यहां तक कि चादर का एक कोना इस के मूंढे (या'नी कन्धे) पर है दूसरे कोने से छूना **ह़राम** है कि येह सब इस के ताबेअ़ हैं जैसे चोली क़ुरआने मजीद के ताबेअ़ थी। (دُرِّ مُختار، رَدُّ الْمُحتار، ج١، ص٣٤٨) **《6》** **क़ुरआन** का **तरजमा** फ़ारसी या उर्दू या किसी और ज़बान में हो उस के छूने और पढ़ने में क़ुरआने मजीद ही का सा **हुक्म** है। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 327) **《7》** किताब या अख़्बार में आयत लिखी हो तो उस आयत पर नीज़ उस आयत वाले हि़स्सए काग़ज़ के ऐ़न पीछे बे वुज़ू और बे ग़ुस्ले को हाथ लगाना जाइज़ नहीं **《8》** जिस काग़ज़ पर सिर्फ़ आयत लिखी हो और कुछ भी न लिखा हो उस को आगे पीछे या कोने वग़ैरा किसी भी जगह पर बे वुज़ू और बे ग़ुस्ला हाथ नहीं लगा सकता।

कलामे पाक के मौला मुझे आदाब सिखला दे
मुझे का'बा दिखा दे गुम्बदे ख़ज़रा भी दिखला दे

किताबें छापने वालों की ख़िदमतों में मदनी इल्तिजा

《9》 दीनी किताबें और माहनामे वग़ैरा छापने वालों की ख़िदमतों में दर्द भरी मदनी इल्तिजा है कि सरे वरक़ (TITLE) के चारों सफ़्ह़ों में से किसी

1 : الٓمّٓ - كٓهٰيٰعٓصٓ - يٰسٓ - طٰهٰ - قٓ वग़ैरा हुरूफ़े मुक़त्तआ़त कहलाते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

भी सफ़ह़े पर आयाते मुबारका या इन के तरजमे न छापा करें कि किताब या रिसाला लेते उठाते हुए बे शुमार मुसल्मान बे ख़याली में बे वुज़ू छूने में मुब्तला हो सकते हैं। इस ज़िम्न में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 23 सफ़ह़ा 393 पर फ़रमाते हैं : आयते करीमा को अख़्बार की त़ब्लक़ (या'नी अख़्बार या रिसाले के बन्डल, पुलन्दे या गड्डी के गिर्द लिपटे हुए काग़ज़) या कार्ड या लिफ़ाफ़ों पर छपवाना बे अदबी को मुस्तल्ज़िम (या'नी लाज़िम करता) और **ह़राम** की त़रफ़ **मुन्जिर** (या'नी ले जाने वाला) है उस पर चिट्ठी रसानों (या'नी डाकियों) वग़ैरहुम बे वुज़ू बल्कि जुनुब (या'नी बे ग़ुस्ल) बल्कि कुफ़्फ़ार के हाथ लगेंगे जो हमेशा जुनुब (या'नी बे ग़ुस्ले) रहते हैं और येह **ह़राम** है। قَالَ تَعَالٰی (**अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया) لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ؕ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** इसे न छूएं मगर बा वुज़ू) मोहरें लगाने के लिये ज़मीन पर रखे जाएंगे फाड़ कर रद्दी में फेंके जाएंगे इन बे ह़ुर्मतियों पर आयत का पेश करना इस (या'नी छापने या लिखने वाले) का फ़े'ल हुवा।

کردم از عقل سوالے کہ بگہ ایمان چیست　　عقل در گوشِ دلم گفت کہ ایمان ادب ست

(मैं ने अ़क़्ल से येह सुवाल किया तू येह बता दे कि ईमान क्या है, अ़क़्ल ने मेरे दिल के कानों में कहा कि ईमान अदब का नाम है)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अगर किसी किताब के सरे वरक़ (TITLE) पर आयते क़ुरआनी छपी हुई देखें तो दरख़्वास्त है अच्छी अच्छी निय्यतें कर के किताब छापने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الايمان)

वाले को मुन्दरिजए बाला तह़रीर दिखाइये या इस की फ़ोटो कापी ब ज़रीअ़ए डाक इरसाल फ़रमाइये और साथ में येह भी लिखिये कि आप की फ़ुलां किताब के सरे वरक़ पर आयते करीमा देखी तो तह़रीरी त़ौर पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हूं कि बराए करम ! सरे वरक़ पर आयाते मुबारका और इन के तरजमे न छापिये ताकि मुसल्मान बे ख़याली में बे वुज़ू छूने से मह़फ़ूज़ रहें। جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا । अगर पब्लीशर बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का आ़शिक़ हुवा तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को दुआ़ओं से नवाज़ते हुए आयिन्दा एह़तियात़ की निय्यत का इज़्हार करेगा।

मह़फ़ूज़ ख़ुदा रखना सदा बे अदबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"क़ुरआन" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से तरजमए क़ुरआन के 4 मदनी फूल

《1》 बिग़ैर तफ़्सीर सिर्फ़ तरजमए क़ुरआन न पढ़ा जाए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुबारक फ़तवे के एक जुज़ (या'नी ह़िस्से) का ख़ुलासा है : बिग़ैर इ़ल्मे कसीर के सिर्फ़ तरजमए क़ुरआन पढ़ कर समझ लेना मुम्किन नहीं, बल्कि इस में नफ़्अ़ के मुक़ाबले में नुक़्सान ज़ियादा है। तरजमा पढ़ना है तो किसी आ़लिमे माहिर कामिल सुन्नी दीनदार से पढ़े। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 23, स. 382, मुलख़्ख़सन) **《2》** क़ुरआने पाक को समझने के लिये मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, वलिय्ये ने'मत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत,बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का शोहरए आफ़ाक़ तरजमए कु़रआन "**कन्ज़ुल ईमान**" मअ़ तफ़्सीर "**ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान**" (अज़ ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद नई़मुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی) ह़ासिल कीजिये ❁3❁ रोज़ाना कु़रआने पाक की कम अज़ कम 3 आयात (मअ़ तरजमा व तफ़्सीर) की **तिलावत** के **मदनी इन्आ़म**[1] पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकतें आप ख़ुद ही देख लेंगे ❁4❁ दा'वते इस्लामी के तन्ज़ीमी अन्दाज़ के मुत़ाबिक़ हर मस्जिद को एक ज़ैली ह़ल्क़ा क़रार दिया गया है। तमाम ज़ैली ह़ल्क़ों में रोज़ाना नमाज़े फ़ज्र के बा'द इज्तिमाई त़ौर पर **तीन आयात** की तिलावत मअ़ तरजमए कन्ज़ुल ईमान व तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान के **म–दनी ह़ल्क़े** का हदफ़ है। अगर मुयस्सर हो तो इस्लामी भाई इस में **शिर्कत** की सआ़दत पाएं।

"कन्ज़ुल ईमान" ऐ ख़ुदा मैं काश ! रोज़ाना पढ़ूं
पढ़ के तफ़्सीर इस की फिर उस पर अ़मल करता रहूं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینه

1 : सह़ीह़ इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्लामी भाइयों के लिये 72 और इस्लामी बहनों के लिये 63 मदनी इन्आ़मात ब सूरते सुवालात दिये गए हैं कई ख़ुश नसीब रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" कर के ह़स्बे तौफ़ीक़ जवाबात की ख़ाना पुरी करते और हर मदनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाते हैं। मुकम्मल त़रीक़ा जानने के लिये मक्तबतुल मदीना से "मदनी इन्आ़मात" नामी रिसाला ह़ासिल कीजिये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

''रब'' के दो हुरूफ़ की निस्बत से मुक़द्दस अवराक़ को दफ़्न करने या ठन्डे करने के 2 मदनी फूल

﴾1﴿ अगर मुस्हफ़ (या'नी कुरआन) शरीफ़ पुराना हो गया, इस क़ाबिल न रहा कि उस में तिलावत की जाए और येह अन्देशा है कि इस के अवराक़ मुन्तशिर हो कर ज़ाएअ़ होंगे तो किसी पाक कपड़े में लपेट कर एह़तियात की जगह **दफ़्न** किया जाए और दफ़्न करने में इस के लिये **लह़द बनाई जाए** (या'नी गढ़ा खोद कर जानिबे क़िब्ला की दीवार को इतना खोदें कि सारे मुक़द्दस अवराक़ समा जाएं) ताकि उस पर मिट्टी न पड़े या (गढ़े में रख कर) उस पर तख़्ता लगा कर छत बना कर मिट्टी डालें कि उस पर मिट्टी न पड़े, **मुस्ह़फ़ शरीफ़** पुराना हो जाए तो उस को जलाया न जाए। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 138, मक्तबतुल मदीना) ﴾2﴿ **मुक़द्दस अवराक़** कम गहरे समुन्दर, दरिया या नह्र में न डालें जाएं कि उ़मूमन बह कर कनारे पर आ जाते और सख़्त बे अदबियां होती हैं। **ठन्डा करने का त़रीक़ा** येह है कि किसी थेली या ख़ाली बोरी में भर कर उस में वज़्नी पथ्थर डाल दिया जाए नीज़ थेली या बोरी पर चन्द जगह इस त़रह़ चीरे लगाए जाएं कि उस में फ़ौरन पानी भर जाए और वोह तह में चली जाए वरना पानी अन्दर न जाने की सूरत में बा'ज़ अवक़ात मीलों तक तैरती हुई कनारे पहुंच जाती है और कभी गंवार या कुफ़्फ़ार ख़ाली बोरी ह़ासिल करने के लालच में मुक़द्दस अवराक़ कनारे ही पर ढेर कर देते हैं और फिर इतनी सख़्त बे अदबियां होती हैं कि सुन कर उ़श्शाक़ का कलेजा कांप उठे ! मुक़द्दस अवराक़ की बोरी गहरे पानी तक पहुंचाने के लिये मुसल्मान कश्ती वाले से भी तआ़वुन ह़ासिल किया जा सकता है मगर बोरी में चीरे हर ह़ाल में डालने होंगे।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

मैं अदब क़ुरआन का हर ह़ाल में करता रहूं
हर घड़ी ऐ मेरे मौला तुझ से मैं डरता रहूं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"कलामुल्लाह" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से मुतफ़र्रिक़ 8 मदनी फूल

﴾1﴿ क़ुरआने मजीद को **जुज़्दान व ग़िलाफ़** में रखना अदब है। सह़ाबा व ताबिईन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم اَجْمَعِيْن के ज़माने से इस पर मुसल्मानों का अ़मल है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 139) ﴾2﴿ क़ुरआने मजीद के **आदाब** में येह भी है कि इस की त़रफ़ **पीठ** न की जाए, न **पाउं** फैलाए जाएं, न पाउं को इस से ऊंचा करें, न येह कि ख़ुद **ऊंची** जगह पर हो और क़ुरआने मजीद नीचे हो। (ऐज़न) ﴾3﴿ **लुग़त** व नह़्व व सर्फ़ (तीनों उ़लूम) का एक (ही) मर्तबा है, इन में हर एक (इ़ल्म) की किताब को दूसरे की किताब पर रख सकते हैं और इन से ऊपर **इ़ल्मे कलाम** की किताबें रखी जाएं इन के ऊपर **फ़िक़्ह** और **अह़ादीस व मवाइ़ज़ व दा'वाते मासूरा** (या'नी क़ुरआनो अह़ादीस से मन्क़ूल दुआ़एं) फ़िक़्ह से ऊपर और **तफ़्सीर** को इन के ऊपर और **क़ुरआने मजीद** को सब के ऊपर रखिये। क़ुरआने मजीद जिस सन्दूक़ में हो उस पर **कपड़ा** वग़ैरा न रखा जाए। (فتاوٰی عالمگیری، ج٥، ص٣٢٣-٣٢٤) ﴾4﴿ किसी ने मह़्ज़ **ख़ैरो बरकत** के लिये अपने मकान में क़ुरआने मजीद रख छोड़ा है और तिलावत नहीं करता तो गुनाह नहीं बल्कि उस की येह निय्यत बाइ़से **सवाब** है। (فتاوٰی قاضی خان، ج٢، ص٣٧٨) ﴾5﴿ बे ख़याली में क़ुरआने करीम अगर हाथ से छूट कर या त़ाक़ वग़ैरा पर से ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया (या'नी गिर पड़ा) तो न गुनाह है न कोई कफ़्फ़ारा ﴾6﴿ गुस्ताख़ी की निय्यत से किसी ने مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक ज़मीन पर दे मारा या ब निय्यते तौहीन

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ़ और रोजे़ जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

इस पर पाउं रख दिया तो **काफ़िर** हो गया ﴿7﴾ अगर क़ुरआने मजीद हाथ में उठा कर या इस पर हाथ रख कर ह़लफ़ या क़सम का लफ़्ज़ बोल कर कोई बात की तो येह बहुत "सख़्त क़सम" हुई और अगर ह़लफ़ या क़सम का लफ़्ज़ न बोला तो सिर्फ़ क़ुरआने करीम हाथ में उठा कर या उस पर हाथ रख कर बात करना न क़सम है न इस का कोई कफ़्फ़ारा। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 13, स. 574, 575, मुलख़्ख़सन) ﴿8﴾ अगर मस्जिद में बहुत सारे क़ुरआने पाक जम्अ़ हो गए और सब इस्ति'माल में नहीं आ रहे, रखे रखे बोसीदा हो रहे हैं तब भी उन्हें हदिय्यतन दे कर (या'नी बेच कर) उन की क़ीमत मस्जिद में सर्फ़ नहीं कर सकते। अलबत्ता ऐसी सूरत में वोह क़ुरआने पाक दीगर मसाजिद व मदारिस में रखने के लिये तक़्सीम किये जा सकते हैं। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 16, स. 164, मुलख़्ख़सन)

हर रोज़ मैं क़ुरआन पढ़ूं काश ख़ुदाया
अल्लाह ! तिलावत में मेरे दिल को लगा दे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"मदीना" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से ईसाले सवाब के 5 मदनी फूल

﴿1﴾ **सरकारे** नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार है **: मुर्दे** का ह़ाल क़ब्र में डूबते हुए इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से **इन्तिज़ार** करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की **दुआ़** उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मुतअ़ल्लिक़ीन की त़रफ़ से हदिय्या किया हुवा **सवाब** पहाड़ों की मानिन्द अ़त़ा फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) मुर्दों के लिये "दुआ़ए मग़्फ़िरत करना है।" (شُعَبُ الْاِيمان، ج٦، ص٢٠٣، حديث ٧٩٠٥)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

﴾2﴿ **तबरानी** में है : "**जब** कोई शख़्स मय्यित को **ईसाले सवाब** करता है तो जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام उसे नूरानी तबाक़ में रख कर क़ब्र के कनारे खड़े हो जाते हैं और कहते हैं : "**ऐ क़ब्र वाले !** येह हदिय्या (तोह़फ़ा) तेरे घर वालों ने भेजा है क़बूल कर।" येह सुन कर वोह **ख़ुश** होता है और उस के पड़ोसी अपनी मह़रूमी पर ग़मगीन होते हैं।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرَانِی، ج٥، ص٣٧، حديث ٦٥٠٤، دار الفكر بيروت)

क़ब्र में आह ! घुप अंधेरा है
फ़ज़्ल से कर दे चांदना या रब !

﴾3﴿ **तिलावते क़ुरआन** के साथ साथ **फ़र्ज़,** वाजिब, सुन्नत, नफ़्ल, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, ह़ज, बयान, दर्स, मदनी क़ाफ़िले में सफ़र, मदनी इन्आमात, नेकी की दा'वत, दीनी किताब का मुत़ालआ, मदनी कामों के लिये इन्फ़िरादी कोशिश वग़ैरा हर नेक काम का **ईसाले सवाब** कर सकते हैं।

ईसाले सवाब का त़रीक़ा

﴾4﴿ "ईसाले सवाब" कोई मुश्किल काम नहीं सिर्फ़ इतना कह देना या दिल में निय्यत कर लेना भी काफ़ी है कि मसलन "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** मैं ने जो क़ुरआने पाक पढ़ा (या फ़ुलां फ़ुलां अ़मल किया) इस का सवाब मेरी वालिदए मर्हूमा को पहुंचा।" اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ सवाब पहुंच जाएगा।

फ़ातिहा का त़रीक़ा

﴾5﴿ **आज** कल मुसल्मानों में ख़ुसूसन खाने पर **जो फ़ातिहा का त़रीक़ा** राइज है वोह भी बहुत अच्छा है, इस दौरान तिलावत वग़ैरा का भी ईसाले सवाब किया जा सकता है। जिन खानों का ईसाले सवाब करना है वोह सारे या सब में से थोड़ा थोड़ा खाना नीज़ एक गिलास में पानी भर कर सब कुछ सामने रख लीजिये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

अब ''اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝'' पढ़ कर एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝١ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝٢ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝٣
وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝٤ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝٥ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝٦

तीन बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝١ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝٣
وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۝٤ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝٥

एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝١ مَلِكِ النَّاسِ ۝٢ اِلٰهِ النَّاسِ ۝٣ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ
الْخَنَّاسِ ۝٤ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝٥ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝٦

एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ
الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ ۝

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

एक बार

الٓمّٓ ﴿۱﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۲﴾ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ
بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۳﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ
اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿۴﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى
مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾

पढ़ने के बा'द येह पांच आयात पढ़िये :

﴿۱﴾ وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾ (پ۲ البقرة:۱۶۳)

﴿۲﴾ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾ (پ۸ الاعراف:۵۶)

﴿۳﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ (پ۱۷ الانبیآء:۱۰۷)

﴿۴﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ
النَّبِيّٖنَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾ (پ۲۲ الاحزاب:۴۰)

﴿۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۗ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ
وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲ الاحزاب:۵۶)

अब दुरूद शरीफ़ पढ़िये :

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ صَلٰوةً وَّ سَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

इस के बा'द पढ़िये :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾
وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾ (پ۲۳ الصّٰفّٰت ۱۸۰-۱۸۲)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

अब हाथ उठा कर फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला बुलन्द आवाज़ से "**अल फ़ातिह़ा**" कहे। सब लोग आहिस्ता से सूरए फ़ातिह़ा पढ़ें। अब फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला इस त़रह़ ए'लान करे : "आप ने जो कुछ पढ़ा है उस का सवाब मुझे दे दीजिये।" तमाम ह़ाज़िरीन कह दें : "आप को दिया।" अब फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला **ईसाले सवाब** कर दे।

ईसाले सवाब के लिये दुआ़ का त़रीक़ा

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ा गया (अगर खाना वग़ैरा है तो इस त़रह़ से भी कहिये) और जो कुछ खाना वग़ैरा पेश किया गया है बल्कि आज तक जो कुछ टूटा फूटा अ़मल हो सका है उस का सवाब हमारे नाक़िस अ़मल के लाइक़ नहीं बल्कि अपने करम के शायाने शान मर्ह़मत फ़रमा। और इसे हमारी जानिब से अपने प्यारे मह़बूब, दानाए गु़यूब, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में नज़्र पहुंचा। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत़ से तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तमाम औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की जनाब में नज़्र पहुंचा। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत़ से सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ले कर अब तक जितने इन्सान व जिन्नात **मुसल्मान** हुए या क़ियामत तक होंगे सब को पहुंचा। इस दौरान जिन जिन बुज़ुर्गों को ख़ुसूसन ईसाले सवाब करना है उन का नाम भी लेते जाइये। अपने मां बाप और दीगर रिश्तेदारों और अपने पीरो मुर्शिद को भी **ईसाले सवाब** कीजिये। (फ़ौत शुदगान में से जिन जिन का नाम लेते हैं उन को ख़ुशी ह़ासिल होती है)। अब ह़स्बे मा'मूल दुआ़ ख़त्म कर दीजिये। (अगर थोड़ा थोड़ा खाना और पानी निकाला था तो वोह खानों और पानी में वापस डाल दीजिये)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

सवाब आ'माल का मेरे तू पहुंचा सारी उम्मत को
मुझे भी बख़्श या रब बख़्श उन की प्यारी उम्मत को

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"इ़मामा बांधना सुन्नत है" के सत्तरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से इ़मामे के 17 मदनी फूल

छ[6] फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** ﴾1﴿ इ़मामे के साथ दो रक्अ़त नमाज़ बिग़ैर इ़मामे की सत्तर (70) रक्अ़तों से अफ़्ज़ल हैं (اَلْفِرْدَوْس بمأثور الْخَطَّاب، ج٢، ص٢٦٥، حديث ٣٢٣٣، دارالكتب العلمية بيروت) ﴾2﴿ टोपी पर इ़मामा हमारे और मुश्रिकीन के दरमियान फ़र्क़ है हर पेच पर कि मुसल्मान अपने सर पर देगा इस पर रोज़े क़ियामत एक नूर अ़त़ा किया जाएगा (اَلْجَامِعُ الصَّغِيْر لِلسُّيُوْطِی، ص٣٥٣، حديث ٥٧٢٥) ﴾3﴿ बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं जुमुए़ के रोज़ इ़मामे वालों पर (اَلْفِرْدَوْس بمأثور الْخَطَّاب، ج١، ص١٤٧، حديث ٥٢٩) ﴾4﴿ इ़मामे के साथ नमाज़ दस हज़ार नेकियों के बराबर है (ايضاً، ج٢، ص٤٠٦، حديث ٣٨٠٥, फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 220) ﴾5﴿ इ़मामे के साथ एक जुमुआ़ बिग़ैर इ़मामे के सत्तर (70) जुमुओं के बराबर है (تاريخ مدينة دمشق لابن عساكِر، ج ٣٧، ص٣٥٥، دارالفكر بيروت) ﴾6﴿ इ़मामे अ़रब के ताज हैं तो इ़मामा बांधो तुम्हारा वक़ार बढ़ेगा और जो इ़मामा बांधे उस के लिये हर पेच पर एक नेकी है। (جَمْعُ الْجَوَامع لِلسُّيُوْطِیّ، ج٥، ص٢٠٢، حديث ١٤٥٣٦) ﴾7﴿ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात की किताब, **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 16 स़फ़ह़ा 303 पर है **:** इ़मामा खड़े हो कर बांधे और पाजामा बैठ कर पहने, जिस ने इस का उलटा किया (या'नी इ़मामा बैठ कर बांधा और पाजामा खड़े हो कर पहना) वोह ऐसे मरज़ में मुब्तला

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

होगा जिस की दवा नहीं ﴿8﴾ मुनासिब येह है कि इ़मामे का पहला पेच सर की सीधी जानिब जाए । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 199) ﴿9﴾ ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक इ़मामे का शिम्ला उ़मूमन पुश्त (या'नी पीठ मुबारक) के पीछे होता था और कभी कभी सीधी जानिब, कभी दोनों कन्धों के दरमियान दो शिम्ले होते, उलटी जानिब शिम्ले का लटकाना ख़िलाफ़े सुन्नत है । (اَشِعَّةُ اللَّمْعَات، ج۳، ص۵۸۲) ﴿10﴾ इ़मामे के शिम्ले की मिक़्दार कम अज़ कम चार उंगल और ज़ियादा से ज़ियादा (आधी पीठ तक या'नी तक़रीबन) एक हाथ (फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 182) ﴿11﴾ इ़मामा क़िब्ला रू खड़े खड़े बांधिये । (کَشْفُ الْاِلْتِبَاس فِی اسْتِحْبابِ اللِّبَاس لِلشَّیْخ عبدالْحَقّ الدِّھلَوی، ص۳۸) ﴿12-13﴾ इ़मामे में सुन्नत येह है कि ढाई गज़ से कम न हो, न छ6 गज़ से ज़ियादा और इस की बन्दिश **गुम्बद नुमा** हो (फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 186) ﴿14-15﴾ रुमाल अगर बड़ा हो कि इतने पेच आ सकें जो सर को छुपा लें तो वोह इ़मामा ही हो गया और छोटा रुमाल जिस से सिर्फ़ दो एक पेच आ सकें लपेटना मक्रूह है (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 299) ﴿16﴾ अगर ज़रूरतन उतारा और दोबारा बांधने की निय्यत हुई तो एक एक पेच खोलने पर एक एक गुनाह मिटाया जाएगा । (मुलख़्ख़स अज़ : फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 214) ﴿17﴾ मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़, ख़ातमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

دَسْتارِمُبارَك آنْحضرَت صلّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلّم

دَر اَکْثَر سَفَیْد بُوَد وَ گاہے سِیاہ اَحیاناً سَبز

नबिय्ये अकरम का इ़मामा शरीफ़ अक्सर सफ़ेद, कभी सियाह और कभी **सब्ज़** होता था । (کَشْفُ الْاِلْتِبَاس فِی اسْتِحْبابِ اللِّبَاس ص۳۸)

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना जाएज़ा लेते हुए नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। ان شاء الله عزوجل'' अपनी इस्लाह़ के लिये **''नेक आ'माल''** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **''मदनी क़ाफ़िलों''** में सफ़र करना है। ان شاء الله عزوجل